खुशहाल खानदान के चश्मो-चिराग

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी 'रसूलुल्लाहﷺ के साथियो का हाल'.

'नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.'

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

*बुखारी व मुस्लिम, रावी हज़रत खब्बाब रदी.

हम लोगो ने अल्लाह की खुशी के लिए मकका से हिजरत की, और रसूलुल्लाहﷺ के साथ मदीना गए, तो हममे से कुछ लोगो की मौत हो गई, उन्हे अपना दुनियावी इनाम कुछ भी ना मिला, ऐसे ही लोगो में से मुसअब बिन उमेर रदी हे, वो उहुद की लडाई में शहीद हुवे, उनके बदन पर एक मोटे कम्बल के सिवा कुछ ना था, वो ही उनका कफन बना, और उसका भी हाल ये था की अगर सर को उससे ढका जाता तो पैर खुल जाते और पैर ढकते तो सर खुला रेह जाता तब आपﷺ ने हम से फरमाया की अच्छा सर को कम्बल से छुपा दो और पैरो पर "इज़खिर" (एक घास का नाम हे) डाल दो, और अल्लाह

के लिए हिजरत करने वालो में से कुछ वो हे जिन हे दीन के लिए कुर्बानियो का फल दुनिया में भी मिला, वो उससे फायदा उठा रहे हे.

हज़रत मुसअब रदी मकका के बहुत खुशहाल खानदान के चश्मो व चिराग थे, उनकी ज़िन्दगी ऐश व आराम की ज़िन्दगी थी, सवारी के लिए बेहतरीन घोडे, सुब्ह की सवारी के लिए अलग, शाम की सवारी के लिए अलग, अच्छे-अच्छे कपडे पेहनते, दिन में कई-कई कपडे बदलते. लेकिन जब नबी की दावत की हकीकत उनकी समझ में आ गई तो उसे कुबूल करने में देर नही लगाई. ये ना सोचा की उसके नतीजे में क्या होगा, और खुब जानते थे की क्या होगा, इसलिए की इस्लाम कुबूल करने वालो पर जो बीत रही थी वो उनकी नज़रो के सामने थी. उनकी इस्लाम से पहले की ज़िन्दगी और इस्लाम लाने के बाद की ज़िन्दगी को सोच कर आपﷺ की आंखो में आंसू आ जाते थे, लेकिन खुद मुसअब रदी को वो ऐश व इशरत की ज़िन्दगी याद नही आती थी, उनकी जुबान पर कभी शिकायत का कोई शब्द नही आया.

*बुखारी, रावी हज़रत अबू हुरैरा रदी.

सुफ्फा वालो में से ७० आदमियो को मेने इस हाल में देखा हे की उनमे से किसी के पास चादर ना थी (जो पूरे बदन को ढांकती हे) बल्की या तो एक तहबन्द बांधे होते या कम्बल जिसे वो अपनी गर्दनो से बांध लेते, किसी का आधी पिण्डली तक पहुंचता और किसी का टखनो तक, तो अपने हाथो से उसे थामे रखते की कही शर्मगाह ना खुल जाए.